वर्ष ६, अंक - ०२, नवंबर २०२५

आओ बातें करें

मानव भारती स्कूल देहरादून की पहल

चार धाम यात्रा

उत्तराखंड की चार धाम यात्रा हिंदू धर्म में सबसे पवित्र और महत्वपूर्ण तीर्थ यात्राओं में से एक है। यह हिमालय की गोद में बसे कर पावन धामों - गंगोत्री ,यमुनोत्री, केदारनाथ, बद्रीनाथ की यात्रा होती है। जो हर साल लाखों श्रद्धालुओं को आकर्षित करती है। यह यात्रा सिर्फ एक धार्मिक अनुष्ठान नहीं बल्कि प्रकृति और आध्यात्मिकता का अदभुत मिलन है।

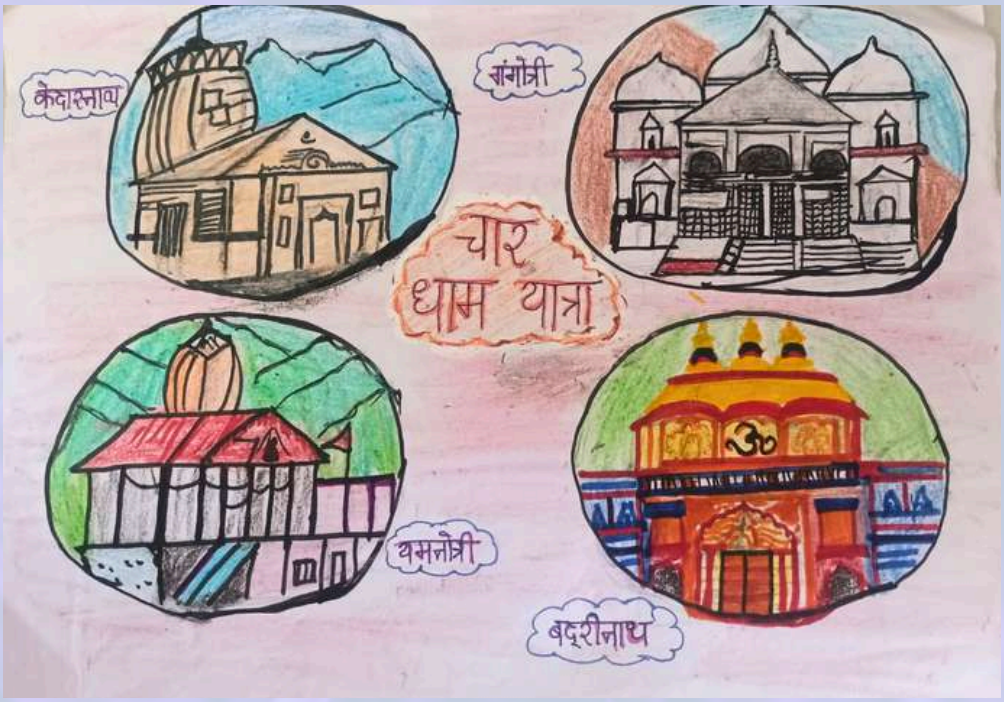

यहां हर साल लाखों श्रद्धालु मोक्ष की प्राप्ति पापों से मुक्ति पाने के लिए इस कठिन यात्रा पर निकलते हैं। हिंदू पौराणिक कथाओं के अनुसार इन चारों धामों की स्थापना आदि शंकराचार्य ने की थी। इन चारों धामों का अपना अलग-अलग धार्मिक महत्व है ।

यमुनोत्री - यह यात्रा का पहला पड़ाव है और माता यमुना का उद्गम स्थल है। यहां देवी यमुना मां का मंदिर है।

गंगोत्री - यह गंगा नदी का उद्गम स्थान है जहां देवी गंगा का मंदिर है ।माना जाता है की गंगा के पवित्र जल से स्नान कर करने से सारे पाप धुल जाते हैं ।

केदारनाथ - यह भगवान शिव के 12 ज्योतिर्लिंगों में से एक है जो भक्तों को भगवान शिव के दर्शन का सौभाग्य प्राप्त होता है ।

बद्रीनाथ - यात्रा का अंतिम पड़ाव बद्रीनाथ धाम है। इसे मोक्ष प्राप्ति का धाम भी माना जाता है। 1962 के भारत चीन युद्ध के बाद सड़क मार्ग का विकास हुआ जिससे यह यात्रा आसान हो गई ।आज सरकार की बेहतर सुविधाओं और हेलीकॉप्टर सेवाओं के कारण हर साल लाखों भक्त इस यात्रा को करते हैं।

- अथर्व कुंद्रा, 9 ब

देवभूमि उत्तराखंड

हर दिशा में हरियाली ओढ़े घाटियां कुछ कहती हैं।
हर पेड़ हर पत्ता यहां जैसे प्रकृति की कविता बहती है।
यह कोई जमीन नहीं यह देवताओं की पहली सांस है।
जहां हर पत्थर पर कोई कथा सोई और हर नदी कोई इतिहास कहे ।

गंगा की धारा यही से बहे शिव के डमरू की गूंज मिले ।
हर सुबह सूरज मुस्काय हर शाम चांदनी कुछ कह जाए।

हिमालय की गोदी में रहता है उत्तराखंड वह नाम है जो हृदय में बसता है ।
बुरांश के फूलों सा लाल है मन जहां से झरती है अमृत की धुन ।

लोक संस्कृति यहां की अमूल्य निधि जहां सरलता है सबसे बड़ी सिद्धि।
मंडाण हो या जागर हर धाम में देव निवास ।
उत्तराखंड की आत्मा है यह लोक प्रकाश।
मेरा उत्तराखंड मेरी पहचान

- अदिति बहुगुणा 12TH पीसीबी

मेरा प्यारा उत्तराखंड

हरी-भरी घाटियाँ, ऊँचे-ऊँचे पर्वत,
जहाँ हर मोड़ पर बहती गंगा की धारा,
और बर्फ की चादर ओढ़े हिमालय हमारा।
देवभूमि की ये पावन धरती,
माँ नंदा, बद्रीनाथ की शक्ति,
ढोल-दमाऊँ की गूँज निराली,
लोकगीतों में है पहचान हमारी।
यहाँ की हवा में है अपनापन,
यहाँ के पानी में है जीवन,
फूलों की घाटी, औली की रानी,
हर कोना है जन्नत की निशानी।
मेरा उत्तराखंड, मेरा अभिमान,
यहीं बसी है मेरी जान,
जिस मिट्टी से जुड़ा है मन,
वही है मेरा उत्तराखंड।

- अंशुल ध्यानी, 11 TH

मेरा उत्तराखण्ड

उत्तराखण्ड, जिसे देवभूमि कहा जाता है, अपनी प्राकृतिक सुंदरता, धार्मिक महत्व और समृद्ध संस्कृति के लिए प्रसिद्ध है। यहाँ की बर्फ़ से ढकी चोटियाँ, नदियाँ और हरे-भरे जंगल इसे और भी आकर्षक बनाते हैं। लेकिन केवल प्रकृति ही नहीं, बल्कि यहाँ की संस्कृति, परंपराएँ और जीवनशैली भी इसे विशेष बनाती हैं।

उत्तराखण्ड की संस्कृति विविध और रंगीन है। यहाँ की वेशभूषा पारंपरिक और आकर्षक होती है। महिलाएँ प्रायः घाघरा-चोली और ओढ़नी पहनती हैं, जबकि पुरुष धोती-कुर्ता या पगड़ी धारण करते हैं। पर्वतीय क्षेत्रों में ऊनी वस्त्र विशेष रूप से पहने जाते हैं क्योंकि वहाँ का मौसम ठंडा रहता है।

यहाँ का खान-पान भी बेहद स्वादिष्ट और स्वास्थ्यवर्धक है। उत्तराखण्ड के पारंपरिक व्यंजनों में आलू के गुटके, भटवाणी, झंगोरे की खीर, फाणु और काफुली प्रमुख हैं। स्थानीय मसालों और अनाज से बने ये व्यंजन शरीर को ऊर्जा और गर्माहट देते हैं।

उत्तराखण्ड के लोग त्योहारों और मेलों को बड़े उत्साह से मनाते हैं। होली, दिवाली, बैसाखी, फूलदेई, हरेला और घीया संक्रांति यहाँ के प्रमुख त्योहार हैं। इनके अलावा गढ़वाल और कुमाऊँ क्षेत्रों में विभिन्न लोक-नृत्य और लोक-गीत भी प्रसिद्ध हैं, जैसे झोड़ा, चांचरी और छपेली। ये नृत्य और गीत यहाँ की लोकसंस्कृति को जीवंत बनाए रखते हैं।

उत्तराखण्ड में धार्मिक और सामाजिक अनुष्ठानों का भी विशेष महत्व है। देवपूजा, नंदा देवी राजजात यात्रा और क्षेत्रीय देवी-देवताओं के मेले यहाँ की आस्था और परंपरा को दर्शाते हैं।

संक्षेप में, उत्तराखण्ड केवल पहाड़ों और नदियों की भूमि नहीं है, बल्कि यह एक जीवंत संस्कृति, परंपरा और आस्था का अद्भुत संगम है। इसकी सादगी और रंगीन जीवनशैली हमें भारतीय संस्कृति की विविधता का एहसास कराती है।

- कृष्णा मनदीप नेगी, 11 पी.सी .एम

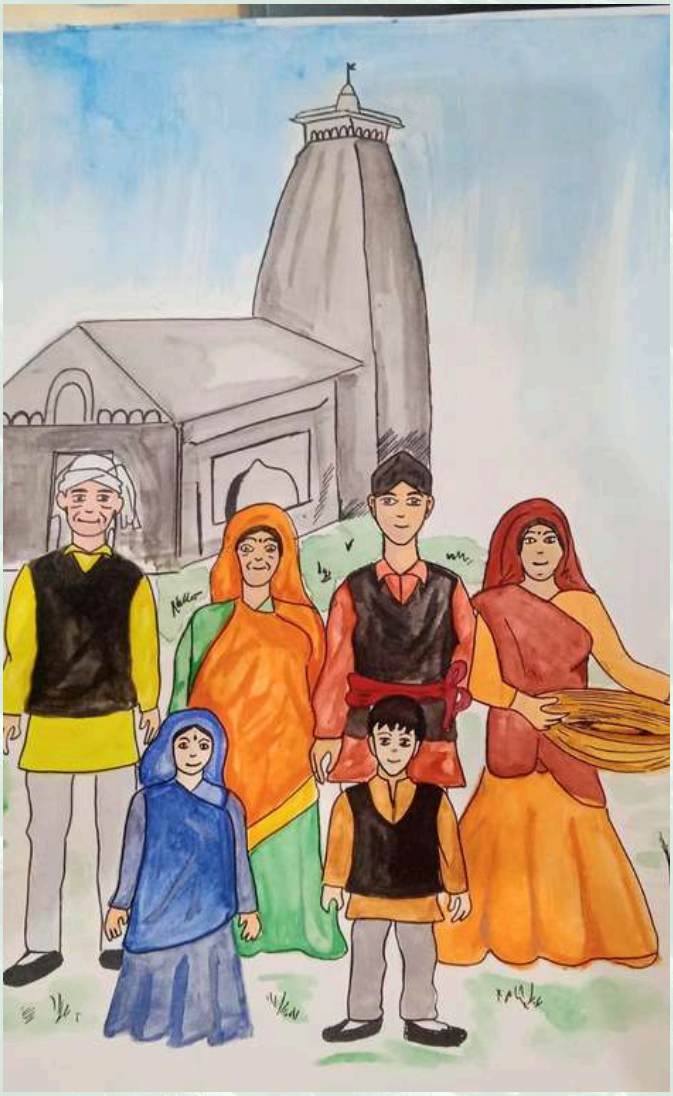

- वैभव नेगी, 11

“कल तक जो साथ थे, आज बस यादें है

प्राकृतिक आपदाएं हमारे जीवन का कठोर सत्य है। जो लाखों जिंदगियां को छीन लेती है। वे सपने जो कभी पूरे होने वाले होते हैं जिस घर में कल तक बच्चों की हंसी गूंजती थी आज वहां मातम हो रखा है। जो मां ने अपने बेटे को सीने से लगाकर गले लगती थी और आशीर्वाद देती थी आज वही मां सिर्फ तस्वीर को देखकर रो रही है। लोग खबर देखकर कहते हैं कि सिर्फ 12 लोग ही तो गए हैं उन 12 लोगों के पीछे 12 संसार थे। मासूम बच्चे जो कुछ बनना चाहते थे किसी की मदद करना चाहते थे वह नौजवान जिन पर परिवार को सहारा देने की उम्मीद थी वह माता-पिता जिनकी आंखों में बच्चों की सफलता को देखने के सपना था और वह बुजुर्ग लोग जो अपने परिवार के साथ कुछ समय बिताना चाहते थे। दुर्भाग्य से हमें से बहुत से लोग दूसरों का दर्द समझ ही नहीं पाते शिक्षा का उद्देश्य केवल किताबों तक सीमित नहीं होना चाहिए हमें यह भी सिखाया जाना चाहिए कि दुख और दर्द क्या होता है और कैसे किसी का दुख महसूस किया जा सकता है। इस साल 2025 में है तो उत्तराखंड, पंजाब, हिमालय, जम्मू कश्मीर में कितनी तबाही हुई है मुर्शिदाबाद बारिश क्लाउडबर्स्ट फ्लैश फ्लड से हजारों लोगों के घर उजड़ गए परिवार वाले चले गए वह सुंदर-सुंदर झरने अब मूसलाधार बारिश से बहुत ही खौफनाक रूप ले चुके हैं जगह-जगह भूस्खलन हुआ और सड़कों फूलों और गांव के संपर्क टूट गए कई घर मलबे में तब्दील हो गए। देवभूमि कहलाने वाला यह प्रदेश आज दर्द और संकट की भूमि बन चुका है।

प्राकृतिक आपदाएँ केवल आँकड़े नहीं होतीं, बल्कि टूटे हुए सपनों और बिखरे हुए परिवारों की कहानियाँ होती हैं। आज उत्तराखंड और हिमालयी क्षेत्रों में हुई तबाही हमें यह सिखाती है कि हमें संवेदनशील और सजग बनना होगा। अगर हम सिर्फ शोक मनाकर रुक जाएँगे तो कल फिर वही दर्द सामने आएगा। हमें मिलकर सहानुभूति, मदद और बदलाव की दिशा में कदम उठाने होंगे ताकि भविष्य सुरक्षित हो सके।

“प्रकृति का प्रकोप हमें बार-बार याद दिलाता है कि इंसान कितना असहाय है। अगर आज हम नहीं चेते तो कल इतिहास हमें माफ़ नहीं करेगा।”

- श्रेया सेनवाल, ९ ब, पंचशिला सदन

प्राकृतिक आपदा

ज़ब महाकाल का ब्रज छूटता है, तो पृथ्वी थरथराने लगती है। बड़े - बड़े वृक्ष समूल उखड़ जाते हैं। गगन- चुम्बी अट्टालिकायें टीले रेत की भांति ढहकर धराशाही हो जाती है।

एक प्राकृतिक आपदा एक युग का अंत होता है उसके बाद जान माल का नुकसान होता उसका ऑकलन करना कितना भयावह होता है। यह कल्पना से परे है।इन दिनों उत्तराखंड, हिमाचल प्रदेश, जम्बू कश्मीर, पंजाब कुदरत की मार से कराह रहा है।

आसमान से लगातार बरस रहा आफत जन और तंत्र की चिंता बढ़ा देती है। स्वभाविक भी है आये दिन बादल फटते रहते हैं।अतिवृष्टि से बड़े पैमाने पर हो रहे भू स्खलन और नदी नालों के उफान ने लोगों की दिन की चैन और रात की नींद उड़ा देती है।

स्थिति यह है कि बड़ी संख्या में लोग रतजगा कर रहें हैं। सैकड़ो परिवार अपने आशियाने छोड़कर रिश्तेदारों के यहाँ शरण लिए हुए हैं।

हाइवे, पुल पुलिया, संपर्क मार्ग ध्वस्त होने से जन जीवन पूरी तरह प्रभावित हो जाता है। गर्भवती महिलाओं और मरीजों को अस्पताल पहुँचाना हो , आपदा से जिस तरह की चुनोतियाँ खड़ी कर देती है यह कष्टकारी ही नहीं बल्कि भविष्य की तस्वीर को धुंधला कर देती है।

इसके लिए मानवीय कारण काफी हद तक जिम्मेदार है। नदियों और नालियों पर अतिक्रमण आम हो गया है। कई जगह पूरे मोहल्ले नदी के किनारे बसा दिए गये हैं। यहाँ तक कि नालों को पाटकर भवन खड़े कर दिए जाते हैं।साफ है प्रकृति बार बार संकेत दे रही है इंसानी समाज उसको देने क़ी कोशिस न करे। विज्ञान की बदौलत प्रकृति की चंद गति विधियों को अंदाजा लगाकर इंसानी दुनिया ज़ब इतराती है, तब अतिबृष्टि, बाढ़, भूकंप, भूस्खलन के जरीये विज्ञान की सीमाओं का अहसास कराता है। इसलिए विकास की मीनारे गढ़ते समय इन ज्ञात स्थितियों की गंभीर ऑकलन की जरूत है। खासकर जब हम स्मार्ट सिटी के विकास का खाका खींच रहें हो, नये शहर बसाने के सपने संजो रहें हैं, विकास जरुरी है, पर विवेक गंवा कर नहीं।

- अंशिका मिश्रा, 9 अ

जगत से प्यारा उत्तराखंड

जगत से प्यारा उत्तराखंड,
फूलों की डाली उत्तराखंड।
सबकी आंख का तारा उत्तराखंड,
जगत से प्यारा उत्तराखंड।
जो भी आता उत्तराखंड,
जाने का वापस करता नहीं मन।
कण-कण में है उत्तराखंड,
जगत से प्यारा उत्तराखंड।

- अंश जैसवाल, 6 (ब)

देवभूमि हमारी प्यारी है

देवभूमि हमारी प्यारी है,
हिमालय की गोद में सजी प्यारी है।
केदार बद्रीनाथ की छाया न्यारी है ,
शिव, विष्णु ,नारायण संग हमारी प्यारी है।
गंगा यमुना की धार बहती है ,
वन, पर्वत, झरने सब हरे भरे हैं ।
देवताओं की भक्ति से जीवन रोशन है,
धरती मां की छाया में हम सब बसे हैं।
देवभूमि हमारी प्यारी है ।
नारद की वीणा गाए मधुर गीत
पर्वतों की हवा में गूंजे संगीत
अमर देवताओं की छाया है हरओर
उत्तराखंड हमारा है अनमोल ।

- तेजल रावत, 6 (ब)

मेरा उत्तराखंड

देवों का एक सुंदर सा
चमत्कार है उत्तराखंड
मेरी शान,मेरा मान
है उत्तराखंड
मेरी मातृभूमि , मेरी देवभूमि
है उत्तराखंड
सबसे अनोखा , सबसे निराला
है मेरा उत्तराखंड
नदियों का ठंडा साफ पानी
पहाड़ों की हल्की सूरज की किरण
हां यही , यही है मेरा उत्तराखंड

- अवन्या बडोनी, 6 (ब)

सच्चाई की जीत (कहानी)

एक बार की बात है। एक गांव में श्याम नाम का एक लड़का रहता था। वह हमेशा सच बोलता था, चाहे सच बोलने के बाद उसे कितनी भी कठिनाइयां क्यों न झेलनी पड़े । एक बार वह स्कूल में अपनी कक्षा के बच्चों के साथ मैदान में क्रिकेट खेल रहा था।खेलते समय गलती से गेंद उसके हाथ से छूट गई और कक्षा की खिड़की से टकरा गई और खिड़की का कांच टूट गया, सभी बच्चे डर के मारे कक्षा में भाग गए। थोड़ी देर बाद जब मास्टर जी आए तो कक्षा की खिड़की का कांच टूटा हुआ देखकर, वह बहुत क्रोधित हो गए उन्होंने सभी बच्चों से पूछा कि खिड़की का कांच कैसे टूट गया? पर सभी बच्चे डर के मारे कुछ नहीं बोले पर श्याम खड़ा हुआ, उसने अपनी गलती स्वीकार की और सच कहा कि गेंद खेलते समय गलती से उसके हाथ से छूट गई और खिड़की का कांच टूट गया।

उसने फिर मास्टर जी से अपनी गलती की माफी मांगी। कुछ देर तक मास्टर जी चुप रहे फिर उन्होंने श्याम से कहा कि मैं तुमसे गुस्सा नहीं हूं क्योंकि तुमने सच बोला और सभी बच्चों को तुमसे शिक्षा लेनी चाहिए कि हमेशा सच बोलना चाहिए। चाहे परिस्थिति कितनी भी कठिन क्यों ना हो हमेशा सच बोलना चाहिए। क्योंकि अंत में जीत हमेशा सच्चाई की ही होती है।

- दिव्यांशी बिष्ट, 7

उत्तराखंड राज्य पर आधारित सामान्य ज्ञान प्रश्नोत्तरी

1. उत्तराखंड का गठन कब हुआ था?
उत्तर: 9 नवंबर, 2000 को।

2 .उत्तराखंड को पहले किस नाम से जाना जाता था?
उत्तर: उत्तरांचल।

3.उत्तराखंड का राजकीय फूल कौन सा है?
उत्तर :ब्रह्मकमल

4.उत्तराखंड का राज्य पशु क्या है?
उत्तर: कस्तूरी मृग।

5.टिहरी बाँध किस नदी पर स्थित है?
उत्तर: भागीरथी नदी पर।

6.उत्तराखंड का सबसे बड़ा जिला कौन सा है?
उत्तर: उत्तरकाशी।

7.उत्तराखंड का सबसे छोटा जिला कौन सा है?
उत्तर: चंपावत।

8.उत्तराखंड के पहले मुख्यमंत्री कौन थे?
उत्तर: नित्यानंद स्वामी।

9.उत्तराखंड की सबसे ऊँची चोटी कौन सी है?
उत्तर: नंदा देवी।

10.चिपको आंदोलन की शुरुआत कहाँ और किस वर्ष हुई थी?
उत्तर: चिपको आंदोलन की शुरुआत चमोली जिले के रैणी गाँव में 1973 में हुई थी।

- सानवी रौथाण, ८ (अ)

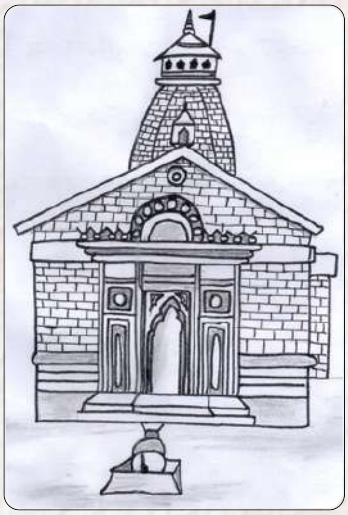

1. उत्तराखंड की ग्रीष्मकालीन राजधानी कौन सी है?
उत्तर: गैरसैंण

2. उत्तराखंड किस राज्य से अलग होकर बना था?
उत्तर: उत्तर प्रदेश

3. फूलों की घाटी उत्तराखंड के किस जिले में स्थित है?
उत्तर: चमोली

4. उत्तराखंड के पहले राज्यपाल कौन थे?
उत्तर: सुरजीत सिंह बरनाला

5. नंदा देवी बायोस्फीयर रिजर्व किसके लिए प्रसिद्ध है?
उत्तर: वन्यजीव

6. उत्तराखंड की सबसे लंबी नदी कौन सी है?
उत्तर: काली नदी (शारदा नदी)

7. उत्तराखंड में बोली जाने वाली प्रमुख भाषाएँ कौन सी हैं?
उत्तर: गढ़वाली, कुमाऊँनी

8. केदारनाथ मंदिर किस देवता को समर्पित है?
उत्तर: भगवान शिव

9. जिम कॉर्बेट राष्ट्रीय उद्यान किस जिले में स्थित है?
उत्तर: नैनीताल

10. उत्तराखंड की शीतकालीन राजधानी कौन सी है?
उत्तर : देहरादून

- अनीका भंडारी, ८ (अ)

व्याकरण गतिविधियां

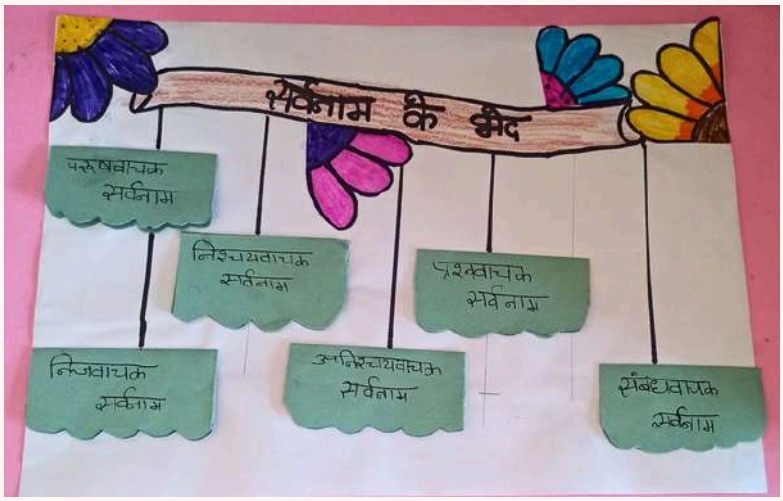

आत्मविश्वास से जीवन परिवर्तन

मैं मानव भारती विद्यालय में अध्यापिका हूं। जहां पर मैं माध्यमिक कक्षाओं के छात्रों को हिंदी विषय पढ़ाती हूं ।मेरे विद्यालय में कक्षा आठवीं में एक बच्चे का प्रवेश हुआ जो बेहद शर्मीले स्वभाव का था ।उसके पिता किसी संस्थान में माली का कार्य करते थे ।

उन्हें काफी कम वेतन मिलता था। इस कारण उसके घर की आर्थिक स्थिति ठीक नहीं थी ।इस छात्र अंकित की मां अनपढ़ थी यह हमें तब पता चला जब वह एक छात्र अभिभावक अध्यापक चर्चा में हस्ताक्षर नहीं कर पाई और अंक पत्र सूची पर अंगूठा लगाने लगी। बच्चे की पारिवारिक स्थिति के बारे में जानने पर मुझे उस बच्चे अंकित के प्रति सहानुभूति हुई।

मैंने उसे प्यार से बात की और लगातार उसका उत्साह बढ़ाने का प्रयत्न करने लगी। मैंने उसे अपने बच्चों की पुरानी किताबें दी और समय-समय पर उसकी सहायता करने लगी। वह छात्र धीरे-धीरे विद्यालय की अनेक गतिविधियों में भाग लेने लगा। पढ़ाई में ध्यान देने के साथ-साथ वह अन्य अध्यापकों के साथ घुल- मिल गया। अंग्रेजी अध्यापिका ने भी उसकी समय-समय पर मदद की उसका उत्साह वर्धन किया उसे अंग्रेजी विषय की किताबें दी । उसने कक्षा 10 की परीक्षा अच्छे अंकों से उत्तीर्ण की। अंकित ने 11वीं कक्षा में गणित विषय के साथ विज्ञान शाखा का चयन किया। विद्यालय में अन्य शिक्षकों के सहयोग मिलने के कारण उसने इंजीनियरिंग प्रवेश परीक्षा की तैयारी शुरू की। 12वीं कक्षा में अंकित ने प्रथम पांच बच्चों में अपनी जगह बनाई । जेईऔर एडवांस की परीक्षा उत्तीर्ण कर राजकीय इंजीनियरिंग कॉलेज में प्रवेश पा लिया । अध्यापकों के प्रोत्साहन से लगातार अंकित में पढ़ाई के प्रति रुचि व आत्मविश्वास बढ़ा। इस समय वह छात्र अपना इंजीनियरिंग का कोर्स पूरा कर रहा है। यह कहानी हमें यह बताती है कि आर्थिक विषमता को आत्म अनुशासन एवं आत्मविश्वास परास्त कर देता है।

- डॉ बबिता गुप्ता, हिंदी अध्यापिका

देवभूमि उत्तराखंड

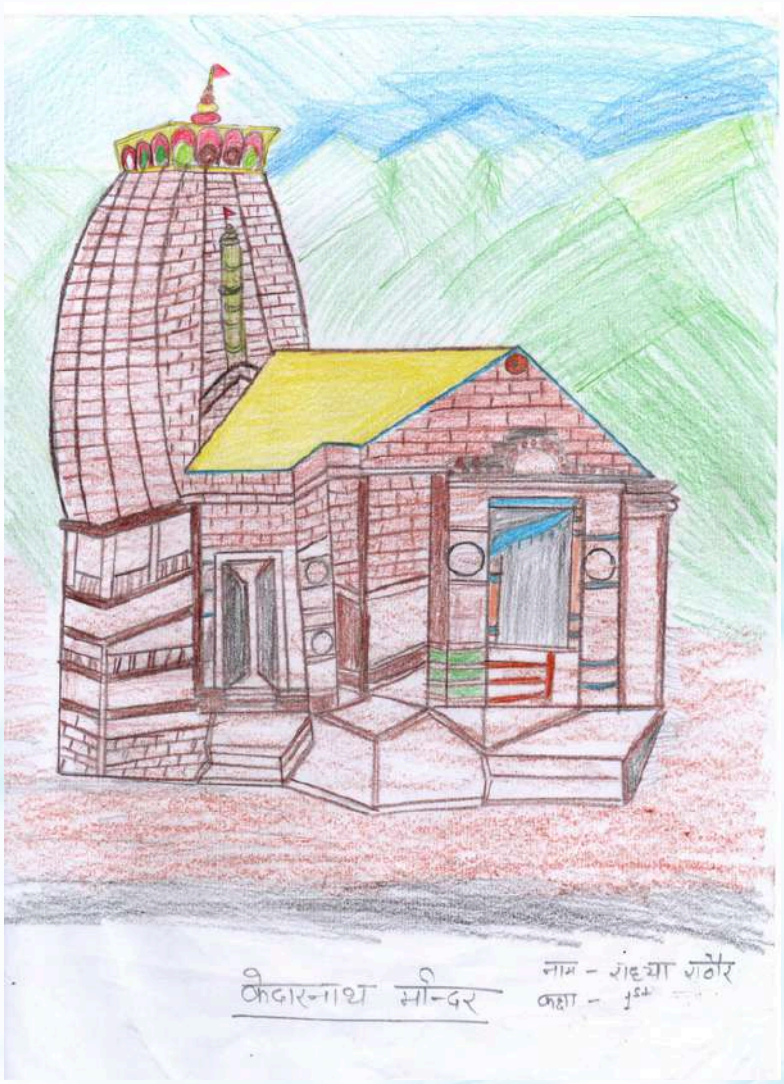

उत्तराखंड हमारे देश का २७ वा राज्य है। जिसका गठन ९ नवंबर २००० को हुआ था। उत्तराखंड उतर प्रदेश से अलग कर के बनाया गया था।जिसकी राजधानी देहरादून है। उत्तराखंड का नाम पहले उत्तरांचल था। जिसे जनता की मांग और पौराणिक इतिहास की वजह से बदलकर 2007 में उत्तराखंड किया गया बताया जाता है कि राजा विराट की पुत्री उत्तरा का विवाह अर्जुन के पुत्र अभिमन्यु के साथ करने पर उन्हें यह राज्य दहेज में दिया था और इसे उत्तर का स्त्री धन माने जाने के कारण उत्तराखंड पड़ा इस राज्य को बनने के लिए यहां के लोगों ने बहुत बड़ा आंदोलन किया था हालांकि आंदोलन शांतिपूर्वक था मगर रामपुर तिराहा मुजफ्फरनगर जैसे कांड आज भी इतिहास के पन्नों में जीवित हैं यह राज्य अपनी संस्कृति देवी देवताओं के गढ़ और प्राकृतिक सुंदरता के लिए जाना जाता है यहां पर चारों धाम की यात्रा होती है साथ में कई प्राकृतिक स्थलों और पवित्र नदियों का संगम है जिनमें देवप्रयाग हरिद्वार प्रसिद्ध संगम है यहां की राज्य भाषा संस्कृत है यहां जौनसारी गढ़वाली कुमाऊनी कई प्रकार के लोग रहते हैं हमारे राज्य का पुष्प ब्रह्म कमल राज्य पक्षी मोनाल और राज्य पशु कस्तूरी मृग एवं राज्य वृक्ष बुरास है भारत के दो शीर्ष पर्वतारोहण स्थान उत्तराखंड के उत्तरकाशी एवं मुनस्यारी में स्थित है। नंदा राजजात यात्रा एवं कुंभ मेला यहां की संस्कृति और इतिहास को दर्शाती है जिसमें शामिल होकर हम केवल यहां की संस्कृति को न जानकर इसका हिस्सा भी बनते हैं। अंत में उत्तराखंड शांति और अध्यात्म का और और प्रकृति प्रेमियों का पसंदीदा स्थान है देवों की इस भूमि को हम नमन करते हैं और हमें अपने राज्य पर गर्व है उत्तराखंड के 26 में स्थापना दिवस की उत्तराखंड वासियों को बहुत-बहुत बधाई धन्यवाद।

- शालवी थपलियाल, ५

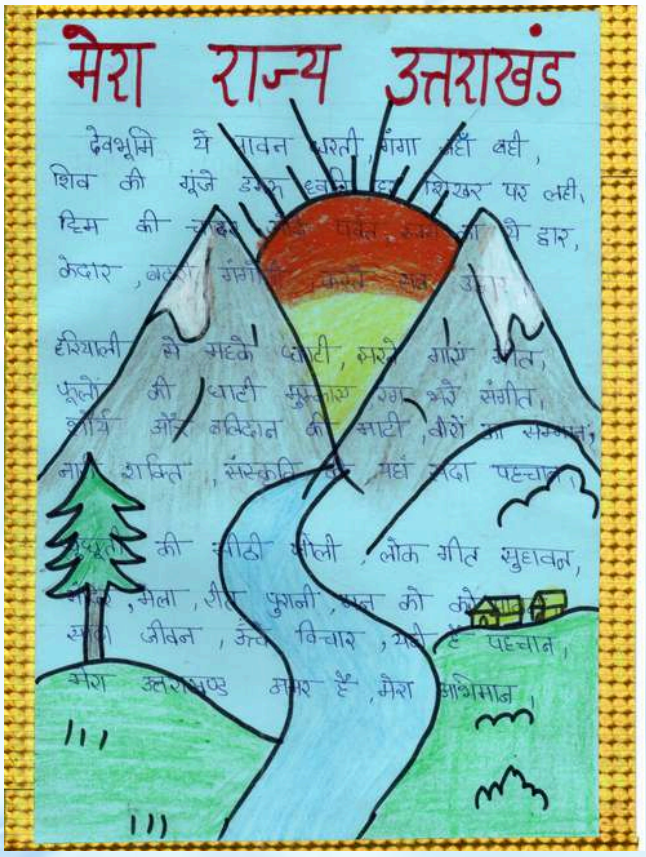

इलेक्ट्रॉनिक मीडिया

जहाँ सवाल उठाने की हिम्मत खत्म होती है,
वहाँ लोकतंत्र का अस्तित्व भी खत्म हो जाता है और मीडिया वही हिम्मत है।
गलतियाँ इंसान करता है, और मीडिया भी इंसानों से ही बनता है। पर उसकी नीयत देश को जागरूक रखने की होती है ।
इलेक्ट्रॉनिक मीडिया को शक की नज़रों से देखना आसान है,पर ज़रा सोचिए,
अगर यही ना हो, तो सच्चाई कहाँ से जानेंगे जनाब।
इलेक्ट्रॉनिक मीडिया कटघरे में नहीं,
लोकतंत्र की चौखट पर खड़ी है और वही उसे जीवित रखती है।
गलतियाँ होती हैं, ये मानता हूँ मैं,
पर मीडिया की ज़रूरत भी पहचानता हूँ मैं।
कटघरे में मीडिया को खड़ा कर रहे हैं लोग,
पर यही तो है जो सच का करता है संयोग।
हर गलती पे मीडिया को दोषी ठहराना आसान है,
पर ज़रा सोचो, देश को जगाना कितना कठिन काम है।
गलती पे बोलना सबको भाता है,
पर जो सही बोले, वो ही मीडिया कहलाता है।

- अंशुल ध्यानी, 11 पीसीएम

कक्षा 6 का प्राकृतिक भ्रमण : लच्छी वाला

मानव भारती विद्यालय में अंतर सदन लोक नृत्य प्रतियोगिता

आत्मानं विद्धि

मानव भारती इंडिया इंटरनेशनल स्कूल
डी- ब्लाक, नेहरू कॉलोनी, देहरादून, पिन- 248001 उत्तराखंड
ईमेल:- hr@mbs.ac.in, वेबसाइट:- www.mbs.ac.in
फोन- 0135-2669306, 8171465265